प्रागैतहिासकि कालीन भत्तिचित्रिों को ख़तरा

चर्चा में क्यों?

भारत के अन्य महत्त्वपूर्ण स्मारकों की तरह तेलंगाना के जयशंकर भूपलपल्ली ज़िले में प्रागैतहिासकि कालीन चट्टानों पर बने चत्रि अमर प्रेम की स्वीकारोक्ति तथा भावी पीढ़ी के लिये उकेरे गए नामों का शकिार हो रहे हैं। पांडवुलागुट्टा (pandavulagutta) के सहस्राब्दी पुराने भत्तिचित्रि जो मानव ज्ञान के वकिास के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं, में बढ़ती हुई वकिृतगिंभीर चिंता का वषिय है। इनकी वकिृतमिें खंडति भत्तिचित्रि और धुंधले पड़ते तैलीय चत्रि शामलि हैं।

महत्त्वपूर्ण बदिु

- पांडवुलागुट्टा 10000 ईसा पूर्व से 8000 ईसा पूर्व के दौरान चट्टानों पर की गई चत्रिकारी, 8वीं शताब्दी के राष्ट्रकूट काल के शलािलेख और 12वीं शताब्दी के काकतयिा साम्राज्य के दौरान चत्रिति कयिे गए भत्तिचित्रिों को आश्रय प्रदान करता है।
- मध्य प्रदेश के भीमबेटका में पाए गए पेड़-पौधे एवं जंतुओं तथा मानव आकृतयिों वाले भत्तिचित्रि लाल गेरू से बने हुए हैं।
- दूसरी ओर काकातयिा साम्राज्य के दौरान के चत्रिकारों ने महाभारत के दृश्यों तथा हाथी के सरि वाले गणेश के चत्रि बनाए थे।
- तीन अलग-अलग कालों की चत्रिकारी का सह-अस्तत्वि में होना प्रशंसनीय है लेकनि 1990 में उनकी खोज के बाद से उन्हें सुरक्षति या संरक्षति नहीं कयिा गया है।
- वे, इसलयिे क्षतग्रिस्त हो गए हैं, क्योंकि लोग उन तक आसानी से पहुँच सकते हैं।
- यदि कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया, तो प्राकृतकि रंगों से बने ये वास्तवकि चत्रि नष्ट हो जाएंगे।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/graffiti-taking-its-toll-on-prehistoric-rock-paintings